Crop Weather Watch Group Advisory
U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की सत्रहवीं बैठक की संस्तुतियाँ

दिनॉक : 31 अक्टूबर, 2018
समय : 11.00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह की वर्ष 2018 की सत्रहवीं बैठक श्री ज्ञान सिंह, सचिव, उपकार की अध्यक्षता में दिनॉक 31 अक्टूबर, 2018 को उपकार सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक मौसम विज्ञान केन्द्र, लखनऊ के निदेशक, कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम एवं कीट वैज्ञानिक, कृषि विश्वविद्यालय, फैजाबाद के मौसम एवं दलहन वैज्ञानिक, रिमोट सेसिंग अप्लीकेशन सेन्टर, कृषि विभाग, पशुपालन विभाग, वन विभाग, उद्यान विभाग, मत्स्य विभाग एवं परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 31 अक्टूबर से 06 नवम्बर, 2018 तक) इस सप्ताह प्रदेश के पश्चिमी उत्तर प्रदेश में (2 से 3 नवम्बर) मध्यम बादल छाये रहने तथा स्थानीय स्तर पर छुटपुट से हल्की वर्षा होने की संभावना है सप्ताह के शेष अन्य दिनों में आसमान साफ रहने एवं वर्षा की कोई संभावना नहीं है। प्रदेश के मध्य भाग, पूर्वी भाग एवं बुन्देलखण्ड के जनपदों में आंशिक बादलों को छोड़कर आसमान साफ रहने एवं वर्षा की कोई संभावना नहीं है। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्रों में दिन का अधिकतम तापमान 31–32 डिग्री सेन्टीग्रेड के मध्य तथा न्यूनतम तापमान 16–17 डिग्री सेन्टीग्रेड के मध्य रहने की संभावना है तथा नमी का प्रतिशत प्रातःकाल 50 से 55 प्रतिशत एवं दोपहर के समय 25 से 30 प्रतिशत रहने की संभावना है। तथा हवायें पहले चार दिनों में (31 अक्टूबर से 3 नवम्बर) में मुख्यतया पूर्वी दक्षिणी पूर्वी एवं अन्य तीन दिनों (4 से 6 नवम्बर) में उत्तरी पूर्वी दिशा में सामान्य गति 2 से 6 किमी./घं. की औसत गति से चलने की संभावना है। प्रदेश के मध्य भाग, पूर्वी भाग एवं बुन्देलखण्ड के जनपदों में अधिकतम तापमान 32–34 डिग्री सेन्टीग्रेड न्यूनतम तापमान 18–19 डिग्री सेन्टीग्रेट के मध्य रहने की संभावना है तथा नमी का प्रतिशत प्रातःकाल 45–50 तथा दोपहर के समय 30–35 प्रतिशत तथा हवायें सप्ताह के पहले चार दिनों में (31 अक्टूबर से 3 नवम्बर) में मुख्यतया पूर्वी दक्षिणी पूर्वी एवं अन्य तीन दिनों (4–6 नवम्बर) में उत्तरी पूर्वी दिशा में सामान्य गति 3 से 6 किमी./घं. की औसत गति से चलने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा दिये गये आंकड़ों के अनुसार कुल रबी की बुवाई का लक्ष्य 129.79 लाख हे. के सापेक्ष दिनांक 28 अक्टूबर, 2018 तक प्रदेश में कुल रबी फसलों की बुवाई 8.12 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 6.26 प्रतिशत है। जबकि गत वर्ष इस अवधि तक बुवाई 13.08 प्रतिशत क्षेत्रफल में हुई थी। इस वर्ष गेहूँ की बुवाई आच्छादन लक्ष्य 99.18 लाख हे. के सापेक्ष 0.63 प्रतिशत जबकि गत वर्ष इस अवधि तक 0.95 प्रतिशत गेहूँ की बुवाई हुई थी। तिलहनी फसलों में तोरिया की बुवाई लक्ष्य 4.50 लाख हे. के सापेक्ष 2.40 लाख हे. में हुई जो लक्ष्य का 53.4 प्रतिशत है जबकि राई–सरसों के 7.45 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष मात्र 3.55 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 47.7 प्रतिशत है।

अतः प्रदेश में फसल एवं मौसम के परिप्रेक्ष्य में किसानों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैंः–

- धान की ठूँठ न जलायें इसे जलाना प्रतिबन्धित है तथा दण्डनीय अपराध है। धान के ठूँठ को शीघ्र सड़ाने हेतु 20 किग्रा. अतिरिक्त नत्रजन अथवा 2.5 किग्रा. प्रति हे. ट्राइकोडर्मा विरडी को मिट्टी में मिलाकर जुताई से पहले खेत में मिला दें।
- रबी फसलों की बुवाई से पूर्व बीज जनित रोगों से बचाव के लिये बीज शोधन तथा भूमि जनित रोगों से बचाव के लिये भूमि शोधन करें।
- गेहूँ की बुवाई एवं उर्वरक सही गहराई में डालने तथा कम व्यय में कतार में बुवाई के लिए जीरोटिल फर्टीड्रिल मशीन का प्रयोग करें।
- मौसम के दृष्टिगत सिंचित दशा में गेहूँ की बुवाई के लिए तापक्रम अनुकूल है अतः बुवाई प्रारम्भ करें।
- कृषि मशीनीकरण को प्रोत्साहित किये जाने हेतु फसल अवशेष के स्व–स्थानीय प्रबन्धन हेतु सुपर स्ट्रा मैनेजमेन्ट सिस्टम कम्बाईन हार्वेस्टर के साथ हैपी सीडर, पैडी स्ट्रा चापर/श्रेडर/मल्चर, स्रबमास्टर/कटर कम स्प्रेडर, रोटरी स्लैशर, रिवर्सेबिल एम.बी. प्लाऊ, जीरोटिल सीड कम फर्टीलाइजर ड्रिल तथा रोटावेटर पर 50–80 प्रतिशत अनुदान 6 नवम्बर तक अनुमन्य किया गया है। यह सुविधा मेरठ, सहारनपुर, आगरा, अलीगढ़ एवं बरेली मण्डलों के समस्त जनपदों के लिए है। अतः कृषक इसका लाभ उठायें।

धान की खेती

- धान की बीज वाली फसल में रोगिंग (अवांछित पौधों को हटाना) करें।
- कटाई के बाद धान को छाया में सूखायें। धूप में सूखाने पर दानों में दरार आयेगी।
- धान की फसल की कटाई 90 प्रतिशत परिपक्वता आने पर या धान की बालियों का सुनहरा रंग प्राप्त होने की अवस्था में करें अन्यथा दाना बिखरने से उत्पादकता में कमी आ सकती है।
- धान काटने के बाद खेत की तैयारी रोटावेटर से करें। रोटावेटर के प्रयोग से धान के ठूँठ छोटे–छोटे टुकड़ों में कट जाते हैं तथा मिट्टी भी भुरभुरी हो जाती है।

गेहूँ की खेती

- भूमि जनित एवं बीज जनित रोगों के नियन्त्रण हेतु बायोपेस्टीसाइड (जैव कवकनाशी) ट्राइकोडर्मा विरडी 1 प्रतिशत डब्लू.पी. अथवा ट्राइकोडर्मा हारजिएनम 2 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.5 किग्रा. प्रति हे. 60–75 किग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर 8–10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त बुआई से पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से अनावृत्त कण्डुआ, करनाल बन्ट आदि रोगों के प्रबन्धन में सहायता मिलती है।
- सिंचित दशा में गेहूँ की क्षेत्रवार संस्तुत उन्नतशील प्रजातियों यथा के–0307, डी.बी.डब्लू.–17, पी.बी.डब्लू–443, एच.डी.–2824, सी.वी.डब्लू–38, के–1006, के–607, के–402, एच.डी.–2967, पी.बी.डब्लू–502 तथा डी.वी.डब्लू–39, एन.डब्लू.–5054, एच. डी.–3043, डी.बी.डब्लू.–90, पी.बी.डब्लू.–जेड.एन.–1, डब्लू.बी.–2 तथा उन्नत पी.बी.डब्लू–343 की बुवाई करें।
- ऊसरीली भूमि हेतु संस्तुत प्रजातियों के.आर.एल.–210 व के.आर.एल.–19, के–8434 (प्रसाद), एन.डब्लू.–1067, के.–1317 व के.आर.एल.– 213 की बुवाई करें।
- सिंचित दशा हेतु कठिया (ड्यूरम) गेहूँ की संस्तुत प्रजातियों पी.डी.डब्लू.–34, पी.डी.डब्लू–215, पी.डी.डब्लू. 233, राज–1555, डब्लू.एच–896, एच.आई.–8498, एच.आई.–8381, जी.डब्लू–190, जी.डब्लू–273 तथा एम.पी.ओ–1215 की बुवाई करें।

जौं की खेती

- जौं की सिंचित दशा में क्षेत्रीय संस्तुत छिलकायुक्त प्रजातियों प्रीती, एन.डी.बी.–1445, नरेन्द्र जौ–192, नरेन्द्र जौ–2, नरेन्द्र जौ–3, आर.डी.–2552, के.–603, एन.डी.बी.–1173, तथा छिलकारहित प्रजाति नरेन्द्र जौं–5, डी.डब्लू.आर.यू.बी.–64, डी.डब्लू. आर.बी.–73 व माल्ट हेतु डी.डब्लू.आर.बी.–123, डी.डब्लू.आर.बी.–101 की बुवाई करें।

मक्का की खेती

- रबी मक्का की संकर प्रजातियों यथा पी.एम.एच.–3, एच.क्यू.पी.एम.–1, सीडटेक–2324, शक्तिमान–1, बुलन्द, संकुल मक्का की किस्मों शरदमणी, शक्ति–1 लावा हेतु पर्ल–पॉपकॉर्न, मीठी मक्का की प्रिया स्वीट कॉर्न व माधुरी स्वीट कॉर्न तथा शिशु मक्का हेतु एच.एम.–4 व आजाद कमल प्रजातियों की बुवाई करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- अलसी की बीज उद्देशीय प्रजातियों शेखर, शारदा, मऊ आजाद, पद्मिनी, उमा, इन्दू तथा द्विउद्देशीय प्रजातियों रूचि, पार्वती, रश्मि आदि की बुवाई करें।
- कुसुम की प्रजातियों के–65 व मालवीय कुसुम–305 की बुवाई करें।

दलहनी फसलों की खेती

- दलहनी फसलों के बीज शोधित एवं उपचारित न होने की स्थिति में बीज शोधन के उपरान्त राइजोबियम कल्चर तथा पी.एस.बी. से उपचारित करने के बाद ही बुवाई करें।
- चना की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु देशी संस्तुत प्रजातियों यथा अवरोधी, पूसा–256, के.डब्लू.आर.–108, डी.सी.पी. 92–3, के.डी.जी.–1168, जी.एन.जी.–1958, जे.पी.–14, जी.एन.जी.–1581, पूर्वी उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजाति गुजरात चना–4, मैदानी क्षेत्रों हेतु के–850, पश्चिमी उ.प्र. हेतु आधार (आर.एस.जी.–936), डब्लू.सी.जी.–1, डब्लू.सी.जी.–2 तथा बुन्देलखण्ड हेतु संस्तुत प्रजातियों राधे व जे.जी.–16 तथा काबुली चना की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजाति एच.के–94–134 पूर्वी उ.प्र. हेतु पूसा–1003, पश्चिम उ.प्र. हेतु चमत्कार (वी.जी.–1053) तथा बुन्देलखण्ड हेतु संस्तुत जी.एन.जी.–1985, उज्जवल व शुभ्रा प्रजातियों की बुवाई करें।
- मटर की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों जैसे–रचना, मालवीय मटर–15, सपना (के.पी.एम.आर.–144–1), दन्तीवाडा मटर–1, आई.पी.एफ.डी.10–12, आई.पी.एफ.डी.6–3, आई.पी.एफ.जी.11–5, आई.पी.एफ.टी.12–2, पूर्वी उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों मालवीय मटर–2, पूसा प्रभात पश्चिमी उ.प्र. हेतु जय (के.पी.एम.आर–522), हरियाल, पंत पी–42, अमन (2009), मध्य उत्तर प्रदेश हेतु संस्तुत प्रजातियों के.एफ.पी.डी.–13, शिखा तथा बुन्देलखण्ड हेतु जे.पी.–885, आदर्श (आई.पी.एफ.–99–15), विकास (आई.पी.एफ.डी. 99–13), प्रकाश आदि प्रजातियों की बुवाई करें।
- मसूर की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों यथा नरेन्द्र मसूर–1, डी.पी.एल.–62, पंत मसूर–5, एल.–4076, के–75, एच.यू.

एल.–57, शेखर–3, शेखर–2, पूर्वी उ.प्र. हेतु के.एल.एस.–218 पश्चिमी उ.प्र. हेतु आई.पी.एल.–406 मैदानी क्षेत्रों हेतु पन्त मसूर–4, डी.पी.एल.–5, पूसा वैभव तथा बुन्देलखण्ड हेतु संस्तुत प्रजाति आई.पी.एल.–81 तथा आई.पी.एम.–316 की बुवाई करें।

- रबी राजमा की क्षेत्रीय संस्तुत प्रजातियों यथा पी.डी.आर.–14, मालवीय–137, बी.एल.–63, उत्कर्ष, अम्बर व अरूण की बुवाई शीघ्र पूर्ण करें।

गन्ना की खेती

- शरदकालीन गन्ना की उत्तम प्रजातियों को.शा.–97261, को.लख.–09204, को.शा.–8279, को.शा.–767, को.–238 एवं को.–0504 आदि की बुवाई करें। संस्तुत प्रजातियों के स्वस्थ बीज की उपलब्धता के लिये निकट के शोध संस्थान, चीनी मिल या गन्ना विकास परिषद या गन्ना पर्यवेक्षक से संपर्क करें।
- शरदकालीन गन्ने की बुवाई में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 90 से.मी. एवं कूड़े की गहराई 10 से.मी. ही रखें। गन्ने की दो पंक्तियों के मध्य उपलब्ध संसाधनों के अनुसार आलू (एक पंक्ति), लहसुन (4 पंक्ति), मटर फली (2 पंक्ति), लाही (2 पंक्ति), सौंफ, धनिया, मसूर, शरदकालीन सब्जियाँ अन्तः फसलों के रूप में लगायें।
- गन्ना बुवाई के समय मृदा परीक्षण की संस्तुतियों के अनुरूप उर्वरक प्रयोग करें। यदि परीक्षण नहीं है तो बुवाई के समय कूड़ों में 115 कि.ग्रा. यूरिया, 132 कि.ग्रा. डी.ए.पी., 65 कि.ग्रा. म्यूरेट आफ पोटाश प्रति हे. का प्रयोग करें। जस्ता की कमी वाले क्षेत्रों में 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट प्रति हे. की दर से डालें।
- यदि शरदकालीन गन्ना के साथ गेहूँ की फसल की अंतःखेती करनी हो तो दो पंक्तियों के मध्य 3 पंक्तियाँ हल से बोयें।

सब्जियों की खेती

- आलू में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा संस्तुत अनुसार उर्वरक प्रयोग कर मिट्टी चढ़ायें।
- रबी सब्जियों की तैयार पौध की रोपाई करें तथा रोपित पौध में निराई–गुडाई, टॉप ड्रेसिंग एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- सब्जी मटर की किस्मों यथा आजाद मटर–1 व काशीशक्ति की बुवाई करें।
- संकर टमाटर की खेती हेतु पौध की रोपाई करें।
- लहसुन की उन्नतशील किस्मों यथा एग्रीफाउण्ड व्हाइट, यमुना सफेद (जी–1), यमुना सफेद–2 (जी–50), यमुना सफेद–3 (जी–282), पन्त लोहित एवं एग्रीफाउण्ड पार्वती की बुवाई करें।
- पालक, मूली, शलजम, चुकन्दर, गाजर की संस्तुत प्रजातियों की बुवाई करें।
- मसाले वाली फसलें जैसे– धनिया, सौंफ, मेथी, कलौंजी, अजवाइन तथा सोया की बुवाई का उचित समय है।

बागवानी

- बागों की जुताई–गुड़ाई करके सफाई करें।
- आम के बाग में प्रथम 10 वर्षों तक अधिक लाभ के लिए अन्तः फसल के रूप में मिर्च, टमाटर, मटर तथा ग्लैडिओलस की खेती करें।

चारा की खेती

- वरदान, मेस्काबी, बुन्देलखण्ड बरसीम (जे.एच.बी.–146), बुन्देलखण्ड बरसीम (जे.एच.टी.बी.–146) तथा बी.एल.–10 प्रजाति के बरसीम बीज को 250 ग्रा. राईजोबियम कल्चर/10 कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें तथा 25–30 कि.ग्रा. बरसीम बीज के साथ 1 कि.ग्रा. टाइप–9 सरसों के बीज को मिलाकर प्रति हे. की दर से बुवाई करें जिससे पहली कटाई में अधिक चारा उत्पादन हो।
- जई की विभिन्न प्रजातियों जैसे कैन्ट, बुन्देल जई–99–2, नरेन्द्र जई, बुन्देल जई–822 एवं बुन्देल जई–851 की बुवाई करें। बुन्देल जई–822 बुन्देलखण्ड के लिए उपयुक्त है शेष प्रजातियाँ पूर्ण उ.प्र. के लिए उपयुक्त हैं। बीज स्थानीय पशुचिकित्सालयों पर उपलब्ध है।

पशुपालन

- बकरियों में पी.पी.आर. का टीकाकरण करायें यह सुविधा सभी पशुचिकित्सालयों पर उपलब्ध है।
- नवम्बर माह में विकास खण्डों पर पशु आयोग्य शिविर/मेले का आयोजन किया जा रहा है। अतः सभी पशुपालक इसका लाभ अवश्य उठायें।

मत्स्य पालन

- सभी मत्स्य पालक अपने तालाबों में जाल चलवाकर मछलियों के स्वास्थ्य का निरीक्षण कर लें। यदि मछलियाँ पूर्णरूप से स्वस्थ है तो शरीर भार का 1 प्रतिशत पूरक आहार प्रतिदिन दें।
- जिन तालाबों में मछलियाँ रोग ग्रस्त है उनमें पूरक आहार न दें तथा उपयोग में लाये गये जाल को पोटैशियम परमैगनेट घोल में 1/2 घण्टे तक भिगोने के पश्चात उसे अच्छी तरह धोकर धूप में सुखाने के पश्चात ही दुबारा उपयोग में लाया जाय।
- रोग से बचाव एवं रोगों के उपचार के लिए सभी मत्स्य पालक अपने तालाबों में सीफैक्स 1 ली./हे. की दर से छिड़काव करें।

- जिन तालाबों में मछलियॉ रोग गस्त पायी गयी है उन तालाबों में मछलियों के रोग के उपचार हेतु सीफैक्स 1 ली./हे. की दर से एक महीने के अन्तराल पर लगातार तीन बार 200 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- वर्तमान समय में सभी तालाबों में जल स्तर पर्याप्त है इसलिए नहर से पानी न लिया जाय यदि किसी तालाब में पानी भरना आवश्यक हो तो बोरिंग से साफ पानी भरा जाय। जिससे संभावित इन्फेक्शन से बचा जा सके।

वानिकी

- यदि यूकेलिप्टस की पौध उगाना चाहते हैं तो उन्हें अंकुरण कक्ष में बो दें। बीज निकटतम वनाधिकारी से प्राप्त किया जा सकता है।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 20 नवम्बर, 2018 को प्रातः 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट **www.upcaronline.org** पर भी उपलब्ध है।
- मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह की संस्तुतियॉ इफ्को किसान संचार लिमिटेड के माध्यम से 11 लाख कृषकों को वॉयस एस.एम.एस. द्वारा प्रेषित की जा रही हैं।
- समूह की संस्तुतियों को ईटीवी, उ.प्र. के अन्नदाता कार्यक्रम में प्रसारित किया जा रहा है।